साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

वर्ष : 5, अंक : 34 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 15 से 21 अप्रैल 2020 पेज : 4 कीमत : 3 रुपये

सन 2100 तक लुप्त हो जाएंगे दुनिया के आधे समुद्र तट

भले ही लोग तेजी से ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाने वाले, जीवाश्म ईंधन से होने वाले प्रदूषण को कम कर रहे है, लेकिन फिर भी एक तिहाई से अधिक रेतीले समुद्र के किनारे गायब हो जाएंगे। इससे बड़े और छोटे देशों में समुद्र के किनारे के पर्यटन पर भारी असर पड़ेगा। यह अध्ययन नेचर क्लाइमेट चेंज नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

यूरोपीय संयुक्त शोध केंद्र के शोधकर्ता माइकेलिस वूसडौका ने बताया कि पर्यटन के अलावा, रेतीले समुद्र तट अक्सर तटीय तूफानों और बाढ़ से बचाव करते हैं। इनके बिना चरम मौसम की घटनाओं का प्रभाव अधिक होने की आशंका है।

कुछ देश, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका, समुद्र तट के कटाव से निपटने के लिए, पहले से ही व्यापक रक्षा प्रणाली की योजना बना रहे हैं, लेकिन अधिकांश देशों में इस तरह की बड़े पैमाने पर इंजीनियरिंग योजनाएं बना पाना तथा उन्हें लागू करना उनके लिए संभव नहीं है।

निष्कर्षों के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया इससे सबसे अधिक प्रभावित हो सकता है। इसका लगभग 15,000 किलोमीटर सफेद-समुद्र तट अगले 80 वर्षों में गायब हो जाएगा। इसी पंक्ति में कनाडा, चिली और संयुक्त राज्य अमेरिका भी खड़े है।

सबसे अधिक रेतीले समुद्र तट खोने वाले 10 देशों में मैक्सिको, चीन, रूस, अर्जेंटीना, भारत और ब्राजील भी शामिल है।

दुनिया भर में रेतीले समुद्र तटों का हिस्सा एक तिहाई से अधिक है। जो अक्सर अत्यधिक आबादी वाले क्षेत्रों में से एक होते हैं। लेकिन नए निर्माण, समुद्र के स्तर में वृद्धि, तूफान या टाइफून में वृद्धि से रेतीले समुद्र तट नष्ट हो रहे हैं, जिससे आजीविका और बुनियादी ढांचे को खतरा है।

यह आकलन करने के लिए कि कितनी जल्दी और कितने समुद्र तट गायब हो सकते हैं, वूसडौका और उनके सहयोगियों ने 1984 से तीन दशकों की सैटेलाइट इमेजरी और प्रवृत्ति (ट्रेंड) को स्थापित किया। वहां से, उन्होंने दो जलवायु परिवर्तन परिदृश्यों के तहत भविष्य में होने वाले कटाव का अनुमान लगाया।

सबसे खराब स्थिति जिसे आरसीपी8.5 मार्ग मान लिया जाता है, जिसके अंतर्गत कार्बन उत्सर्जन निरंतर जारी रहेगा, या पृथ्वी स्वयं वायुमंडलीय ग्रीनहाउस गैस सांद्रता (कान्सन्ट्रेशन) को बढ़ावा देना शुरू कर देगी। उल्लेखनीय है प्रतिनिधि एकाग्रता मार्ग अथवा रिप्रेजेन्टेटिव कंसंट्रेशन पाथवे (आरसीपी) आईपीसीसी आधारित एक परिदृश्य है।

एक कम खतरनाक परिदृश्य, जिसे आरसीपी4.5 कहा जाता है, जिसमें लोग ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित कर इसे लगभग तीन डिग्री सेल्सियस पर रखने की बात करते हैं, जो अभी भी 2015 के पेरिस समझौते में रखी गई सीमा से अधिक है।

आरसीपी8.5 के तहत, सन 2100 तक दुनिया अपने रेतीले समुद्र तटों का 49.5 फीसदी खो देगी, जो लगभग 132,000 किलोमीटर समुद्र तट है। मध्य शताब्दी तक नुकसान 40,000 किलोमीटर से अधिक होगा।

एशियाई डेल्टा क्षेत्र जहां लाखों लोग रहते हैं, हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने से गाद जो रेत का पुनर्निर्माण कर सकती हैं, यह रेत भी जलाशयों के तल में चली जाएगी। कार्गेल ने कहा, दक्षिण एशिया के सिंधु और गंगा डेल्टा क्षेत्रों का तटीय कटाव (क्षरण) बहुत तेज़ी से होने की आशंका है।

पर्यावरण से छेड़छाड़ कर कहां जा रहे हैं हम

इंसान के सुख, शांति और समृद्धि का भंडार प्रकृति है। मनुष्य प्रकृति की गोद में ही पलता-बढ़ता है और इसी के साथ जीवन का समापन भी करता है। प्रकृति के साथ मनुष्य का नैसर्गिक प्यार उसकी भावना में बसा है। जब वह भागदौड़ की जिन्दगी में व्यस्त होता है तो तनिक सुकून और मन की शान्ति के लिए प्रकृति की गोद में जा बैठता है। आज हम प्रकृति से दूर विकास की अंधी दौड़ में मानवता के विकास और विनाश के बीच करोना से जूझ रहे हैं तो लगता है कि प्रकृति ही इसका निदान, उद्भव और अंत है। हम प्रकृति के जितना नजदीक रहते हैं उतना ही चिरायु, स्वस्थ, सानंद रहते हैं। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं वनवासी, जो दूर-दूर तक अस्पताल नहीं रहने के बावजूद स्वस्थ्य हैं।

प्रकृति से दूरी हमें विनाश की ओर ले जाती है। आज करोना के महासंकट काल में जब हम सब घर में हैं तो प्रकृति की यही रचनात्मक लीला और उसकी गोद में पलता-बढ़ता जीवन, जीवन के पोषक तत्व और जीवनदायिनी शक्ति, करोना से लड़ने की ताकत दे रही है। प्रकृति के ये तत्व जीवनदायिनी ताकत के रूप में रोग निरोधक क्षमता का भी विकास कर रही है। शहर के व्यस्ततम जीवन में घर में बैठे-बैठे लॉकडाउन की स्थिति में पेड़-पौधों को सींच कर और उनसे बातें कर, प्रकृति से जीवन और जीवन से प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को तने और पत्तियों में ढूंढ़ रहे हैं। जहां प्रस्फुटित होता हुआ फूल भी है, उसका अवसान भी है। साथ ही नव कोंपलों में नए विहान की आशा-अभिलाषा भी छिपी है।

प्रकृति और भावना के बीच गहरा और प्रगाढ़ संबंध है। समृद्ध परिवेश एवं प्रकृति में भावनाएं प्रफुल्लित एवं प्रमुदित होती है। पवित्र एवं कोमल भावनाएं प्रकृति को विकसित करने में सहायक होती है। इसके विपरीत खंडित प्रकृति में भावनाएं कुम्हलाती हैं और इनकी समस्त संभावनाएं खिलने से पहले ही मुरझा जाती है। ऐसी प्रकृति में भावनाएं टूटती हैं, कराहती हैं और खंडित होती हैं। इन टूटी-फूटी एवं दमित भावनाओं के परिणामस्वरूप ही अनगिनत भावनात्मक और मानसिक विकृतियां उपजती हैं। प्रकृति की समृद्धि से मन एवं भावना का सहज विकास होता है। प्रकृति और भावना के बीच बड़ा ही सूक्ष्म और संवेदनशील संबंध होता है। प्रकृति की सीमाएं एवं अर्थ बहुत ही व्यापक हैं और उसी के अनुरूप भावनाओं की सीमाएं भी अति विस्तृत हैं। दोनों ही व्यापक और संवेदनशील है। प्रकृति में पंच तत्वों से बनी यह धरती और उसकी जलवायु के साथ यहां रहने वाले लोगों के विचार एवं भाव, दोनों संबंधित एवं सम्मिलित होते हैं। यह प्रकृति पिरामिड के समान है। सबसे पहले जड़ पदार्थ आते हैं और क्रमशः सूक्ष्मतर होते-होते अंत में भावनाएं आती है। वेदांत के सूत्रों के अनुसार कहें तो यहां सब कुछ एक कर्ता की लीला है। सबमें वही छाया हुआ है और सब उसी में समाहित है, उससे परे किसी का अस्तित्व नहीं है। विज्ञान की थ्योरी भी इसी भाषा में चीजों को अभिव्यक्त करती है। कहने का मतलब है कि प्रकृति के सभी घटक आपस में एक-दूसरे से जुड़े हैं। भले ही उनका संबंध नजर नहीं आ रहा हो लेकिन हमारा विभाजित और संकुचित दृष्टिकोण सबमें अंतर करता है। प्रकृति में जड़ एवं जीव, पदार्थ एवं मन, सभी एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो हमें पदार्थ प्रभावित नहीं करते, हमें अपने वस्तुओं आदि से अत्यंत लगाव नहीं होता। हम सब केवल अपने दायरे में आने वाले अनंत

आसमान के अंदर एक मुट्ठी भर आसमान को चाहने लगे हैं। इस मुट्ठी भर आसमान का अस्तित्व तभी तक संभव है, जब तक व्यापक और विराट आसमान है। ओस की बूंदें हीरे के समान चमक बिखेरती हैं लेकिन तभी तक, जब तक सूरज की सुनहरी किरणों से तपन नहीं बरसने लगे। तपती किरणों में ओस की बूंद अपना अस्तित्व खो देती है। प्राकृतिक छटाओं में मन एवं भाव भीगते हैं, पुलकित होते हैं। जंगल, नदी, झरना, समुद्र, झील और पहाड़ों की चोटियां सबको आकर्षित करती है। सही मायने में यह प्रकृति का पावन उपहार मन, विचार और भावनात्मक विकास का केन्द्र है। यह मन और भावनाओं को प्रमुदित एवं हर्षित करने के सशक्त माध्यम हैं। भावनाएं तब टूटती है, विखंडित होती है, जब पर्यावरण और प्रकृति में हमारी भावनाओं की अनुकूलता नहीं होती है। गंभीर काम करने के बाद लोग प्रकृति के आंचल में भ्रमण करते और उसके साथ तारतम्य स्थापित करने के लिए निकल पड़ते हैं। प्रकृति के सानिध्य में प्राप्त भावनाओं की प्रसन्नता से इंसान लगातार अपने काम को अंजाम दे सकता है। आज भारी विडंबना है कि हमने प्रकृति और पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचाया है। आधुनिक विकास की अंधी दौड़ में इस कदर खो गए हैं कि कब हमारी कोमल भावनाएं मुरझा कर मर चुकी है और कब हमने प्रकृति का समूल नाश कर दिया है, इसका पता ही नहीं चलता। आज की स्थिति में जितने मनोरोग पनप रहे हैं, नए-नए शारिरिक रोगों की बाढ़ आ चुकी है और जिनका दूर-दूर तक कोई समाधान नजर नहीं आता, इन सबके पीछे प्रकृति का विनाश है। प्रातः बेला में पक्षियों की चहचहाहट से मन खिल जाता था, गोधूलि बेला में उड़ती धूल प्रदूषण नहीं फैलाती थी, बल्कि उसे मिट्टी की भीनी खुशबू समाहित थी। लेकिन आज यह सब कल्पनाओं में ही सिमट कर रह गई है। ऐसे में हमारी भावनाओं को स्वभाविक वृत्ति कैसे मिल सकती है। विकास की दौड़ में हमने बहुत कुछ पाया है लेकिन प्रकृति, पर्यावरण और भावनाओं के रूप में जो खोया है वह अपूरणीय क्षति है। आज के परिवेश में स्वार्थ केंद्रित मन सबकुछ हड़प लेना चाहता है। सेवा और आत्मीयता के अभाव में भाव संवेदना कुम्हला गई है। हम प्रकृति से इतनी दूर चले गए जहां केवल रोगों का आर्तनाद ही सुनाई देता है। इन सबका एक ही समाधान है कि हम एकबार फिर प्रकृति और पर्यावरण को समृद्ध बनाएं। जिस नकारात्मक चिंतन ने इसके आकाश को आच्छादित कर लिया और जिस कुल्हाड़ी ने प्रकृति के सभी घटकों के संबंध को तार-तार कर दिया है, फिर से उसकी भारपाई सकारात्मक विचार और हरीतिमा से की जा सकती है। प्रकृति और पर्यावरण से जो दूरी हमने बनाई है उसे मिटाकर फिर से संवेदनशील संबंधों की स्थापना में ही इन सुरसारूपी अनंत समस्याओं का समाधान है। श्रेष्ठ विचारों से विचार मंडल को समृद्ध करें और जीव-जंतुओं को संरक्षित एवं हरियाली संवर्द्धन कर परिवेश को समुन्नत करें, तभी हमारा समुचित विकास संभव हो पाएगा। कुछ पल फूल-पौधों के साथ गुनगुना कर तो देखिए, जीवन की जिजीविषा को अपना कर तो देखिए। इंसानियत और प्रकृति से यदि हमने प्रेम किया होता तथा उनके नियमों से छेड़छाड़ नहीं किया होता तो हमारे बीच कोरोना जैसी महामारी नहीं होती।

2020 में दर्ज किया गया इतिहास का दूसरा सबसे गर्म महीना

दुनिया भर में तापमान में हो रही बढ़ोतरी बदस्तूर जारी है। पहले जनवरी में रिकॉर्ड तापमान, फिर दूसरी सबसे गर्म फरवरी और अब मार्च को भी सदी के दूसरे सबसे गर्म मार्च के रूप में दर्ज किया गया है। गौरतलब है कि गत माह मार्च का तापमान औसत से 1.16 डिग्री सेल्सियस अधिक रिकॉर्ड किया गया है। जबकि मार्च 2016 अभी भी इतिहास के सबसे गर्म मार्च के रूप में दर्ज है। जबकि नेशनल ओशनिक एंड एटमोस्फियरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार पिछले 140 सालों में 10 सबसे गर्म मार्च 1990 के बाद ही रिकॉर्ड किये गए हैं। जबकि उत्तरी और दक्षिणी दोनों गोलार्द्धों में जनवरी से मार्च की अवधि भी दूसरी बार इतनी गर्म दर्ज की गयी है।

दक्षिण अमेरिका में दर्ज किया गया सबसे गर्म मार्च

यदि दुनिया भर के ज्यादातर हिस्सों को देखें तो हर जगह तापमान में बढ़ोतरी देखी गयी है। जहां दक्षिण अमेरिका और अर्जेंटीना ने अपने सबसे गर्म मार्च को देखा। वहीं कैरेबियन के लिए, यह दूसरा सबसे गर्म मार्च था। अमेरिका में 10 वां सबसे गर्म, वहीं फ्लोरिडा में सबसे गर्म मार्च था7 एशिया का तापमान औसत से 2.5 डिग्री सेल्सियस अधिक था। जिस वजह से यह इतिहास के चौथे सबसे गर्म मार्च के रूप में रिकॉर्ड किया गया। गौरतलब है कि इससे पहले वर्ष 2019 को भी इतिहास के दूसरे सबसे गर्म साल के रूप में दर्ज किया गया था।

धरती ही नहीं समुद्र भी हो रहे हैं गर्म

धरती ही नहीं समुद्रों में भी तापमान बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। अटलांटिक महासागर के कुछ हिस्सों, हिंद महासागर के मध्य क्षेत्र और प्रशांत महासागर के उत्तरी और दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों में भी उच्च तापमान दर्ज किया गया है। जहां पानी की सतह का तापमान 20 वीं सदी के औसत से लगभग 1 डिग्री सेल्सियस अधिक था। जबकि इनसे अलग कनाडा, अलास्का, उत्तरी भारत और उत्तरी अटलांटिक महासागर और अंटार्कटिक के कुछ हिस्सों में तापमान औसत से -1.5 डिग्री सेल्सियस तक कम दर्ज किया गया था।

सिकुड़ रही है आर्कटिक में बर्फ की चादर

नेशनल स्नो एंड आइस डेटा सेंटर ने नासा और एनओएए द्वारा जारी आंकड़ों का विश्लेषण किया है। जिसके अनुसार, मार्च 2020 में आर्कटिक में मौजूद बर्फ की मात्रा 1981 से 2010 के औसत की तुलना में 251,000 वर्ग मील (4.2 फीसदी) कम थी। जोकि 42 साल के रिकॉर्ड में 11 वीं बार सबसे कम पायी गयी है। वहीं मार्च 2020 के दौरान अंटार्कटिक में समुद्री बर्फ की मात्रा 15.4 लाख वर्ग मील थी। जोकि 1980 से 2010 के औसत के लगभग बराबर ही है।

भारत में भी बढ़ेगा अप्रैल से जून के बीच तापमान

आईएमडी द्वारा अप्रैल से जून के लिए जारी मौसम की पूर्वानुमान रिपोर्ट के अनुसार पूर्वी और पश्चिमी राजस्थान में तापमान औसत से 1 डिग्री सेल्सियस अधिक रहने की सम्भावना है। जबकि हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, पूर्वी और पश्चिमी मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, कोंकण और गोवा, महाराष्ट्र, मराठवाड़ा, विदर्भ, उतरी और दक्षिणी कर्नाटक, तटीय कर्नाटक, और केरल में औसत तापमान सामान्य से करीब 0.5 डिग्री से लेकर 1 डिग्री अधिक रहने की सम्भावना है। वहीं देश के बाकि हिस्सों में तापमान सामान्य रहेगा।

सारी दुनिया कोरोनावायरस से लड़ रही है। दुनिया के ज्यादातर लोग लॉकडाउन की वजह से घरों में रहने पर मजबूर हैं। ऐसे में बढ़ता तापमान अपने साथ अन्य चुनौतियों को भी लेकर आएगा। भारत जैसे देशों में जहां एक बड़ा तबका आज भी छोटे-छोटे घरों में रहने को मजबूर हैं। जहां एयरकंडीशन तो दूर, शायद ही पंखे या कूलर की हवा मिल पाती है। ऐसे में लॉकडाउन और बढ़ता तापमान उनकी चुनौतियों को और बढ़ा देगा।

बंद कर दीजिए प्रकृति से खिलवाड़

दिन प्रतिदिन हमारी धरती और गर्म होती जा रही है। क्या यह बढ़ता तापमान अपने साथ नए खतरों को भी लेकर आएगा। दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका भले ही इस की सच्चाई को झुठलाता रहे, पर सच यही है7 धरती न केवल गर्म हो रही है, बल्कि उसका असर भी सारी दुनिया में साफ दिखाई देने लगा है। जो कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कहीं तूफ़ान और कहीं अन्य मौसमी घटनाओं के रूप में सामने आ रहा है। हम कितने भी शक्तिशाली हो जाएं पर प्रकृति से नहीं जीत सकते। हमें उसके साथ सामंजस्य बना कर ही चलना होगा। और यही मानव विकास का मूल है। इतिहास गवाह है, जब भी इंसान ने प्रकृति से आगे जाने की होड़ लगायी है, उसमें हार और नुकसान इंसान को ही उठाना पड़ा है। अभी भी समय है चेत जाइये, नहीं तो न जाने कब आने वाली बाढ़, सूखा, और अन्य आपदाओं का कहर हम पर टूटेगा, इसका पता भी नहीं चलेगा और तब शायद इससे बचने का मौका भी नहीं मिलेगा।

जनवरी से मार्च 2020 के बीच भूमि और समुद्र के तापमान का प्रतिशत

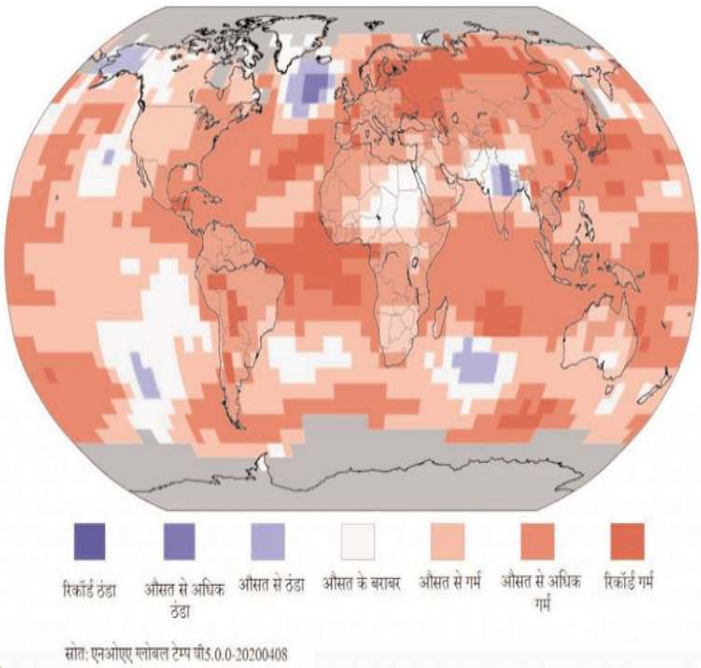

जंगलों में आग लगनी शुरू, लेकिन लॉकडाउन की वजह से कर्मचारी नहीं हुए तैनात

लॉकडाउन से जहां प्रवासी मजदूरों की मुसीबतें और बढ़ीं हैं। वहीं दूसरी ओर जंगल में लगने वाली आग से होने वाले नियमित नुकसान की मात्रा और बढ़ गई है। क्योंकि इस समय में जंगल विभाग के अफसर-कर्मचारी भी लॉकडाउन में जंगलों की पहरेदारी नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में जंगल में लगी आग को रोकना और कठिन हो गया है। ध्यान रहे कि इस बार आग लगने की घटनाएं वक्त से पहले ही शुरू हो गई हैं। ऐसे में डाउन टू अर्थ ने लॉकडाउन के समय देश के चार राज्यों में जंगलों में लगने वाली आग की पड़ताल की है। इस पड़ताल की पहली कड़ी में हिमाचल प्रदेश की स्थिति का आंकलन किया है-

हिमाचल में इस बार समय से पहले गर्मियों की दस्तक से जंगलों मे आग (फॉरेस्ट फायर) की घटनाएं भी जल्द सामने आने लगी हैं। फरवरी के दूसरे सप्ताह में किन्नौर जिले में चोरा, तरांडा, रूपी, छोटा-बड़ा कंबा, रोकचरंग-काचरंग के जंगलों में लगी आग में सेब के छह बगीचों में बागवानों के लगभग 500 सेब के पौधे जल गए। साथ ही, वन संपदा को भी भारी नुकसान पहुंचा। ऐसे लॉकडाउन की स्थिति में अधिक फारेस्ट फायर से निपटने के लिए वन विभाग को अधिक मशक्कत करनी पड़ेगी। कोरोनावायरस के कारण हिमाचल में लॉकडाउन है और ऐसे में आग की घटनाएं अधिक होती हैं तो वन विभाग को पूर्व के वर्षों में जो जन सहयोग मिलता था, वो नहीं मिल पाएगा, जिससे हिमाचल को जंगलों के साथ वन्यप्राणियों की हानि का भी नुकसान उठाना पड़ेगा।

इसके अलावा प्रदेश के अन्य जिलों में भी वनों में आग की घटनाओं का फरवरी और मार्च माह में दर्ज होना मौजूदा फायर सीजन के दौरान फारेस्ट फायर की अधिक घटनाओं की ओर संकेत कर रहा है।

ध्यान रहे कि हिमाचल के कुल क्षेत्रफल का 66 फीसदी हिस्सा वन क्षेत्र है। भारतीय पक्षियों की 36 फीसदी प्रजातियां यहां के जंगलों में पाई जाती हैं। देश में पक्षियों की कुल 1228 प्रजातियां हैं, जिनमें से 447 हिमाचल में पाई जाती हैं, इसके अलावा राज्य में 77 स्तनपायी जानवरों की प्रजातियां पाई जाती हैं। ऐसे में इतनी वन और जैव विविधता वाले हिमाचल प्रदेश को इस फारेस्ट सीजन वनों की आग को जनसहयोग के बिना बचाए रखना सरकार और विभाग के लिए बड़ी चुनौती होगी।

नहीं तैनात हो पाए फायर वॉचर

वनों की आग को नियंत्रण में करने और इसके बारे में तुरंत विभाग का जानकारी देने के लिए वन विभाग हर साल फारेस्ट सीजन के शुरू होने से पहले फारेस्ट वाचर की तैनाती करता है। लेकिन इस बार लॉकडाउन होने की वजह से फायर वॉचर की तैनाती नहीं हो पाई है। इसके अलावा लोगों को वनों की आग के बारे में जागरूक करने के लिए रेंज लेवल पर दो बड़ी जागरूकता कायर्शालाएं आयोजित की जाती थी, जिससे लोगों को वनों की आग से होने वाले नुकसान और इससे कैसे निपटा जाए इसके बारे में बताया जाता था, लेकिन ये कार्याशालाएं भी नहीं हो पाई हैं। वहीं अगर वनों में आग की घटनाओं पर काबू पाने के लिए वन विभाग के पास आधुनिक यंत्र न होने की वजह से वन संपदा का नुकसान भी कम होता नहीं दिख रहा है। वनों की आग को नियंत्रण में पाने के लिए यंत्रों की अनुपलब्धता का मामला राज्य की विधानसभा में भी गुंज चुका है। जिसमें प्रदेश के वन मंत्री ने विधानसभा में माना है कि राज्य के 198 वन क्षेत्रों में आग पर काबू पाने के लिए कोई सरकारी संसाधन नहीं हैं।

राज्य में 339 उच्च संवेदनशील बीटें

वन विभाग के अनुसार राज्य में 26 वन अग्नि संवेदनशील क्षेत्र हैं। प्रदेश की 2026 वन बीटों में से 339 उच्च संवेदनशील, 667 मध्यम और 1020 निम्न संवेदनशील बीटें हैं। इसके अलावा वन विभाग का मानना है कि हिमाचल प्रदेश में वनों की आग के पीछे मुख्य मानवीय कारण है। लोग अवैध कटान करने के बाद ठूंठों को छुपाने के लिए वनों में आग लगा देते हैं, इसके अलावा वन्य प्राणियों के शिकार और इन्हें बस्तियों से दूर रखने के लिए, अच्छी घास के लिए वनों में आग लगा देते हैं। वर्ष 2016-17 में प्रदेश में 1789 और वर्ष 2017-18 में 670 घटनाएं दर्ज की गई थी।

इस बार बढ़ सकती हैं घटनाएं

इस फायर सीजन में हिमाचल प्रदेश में आगजनी की अधिक घटनाएं देखी जा सकती हैं, क्योंकि हिमाचल में 80 फीसदी लोग गांवों में निवास करते हैं और ज्यादातर लोग रोजी-रोटी कमाने के लिए बाहरी राज्यों में नौकरी करते हैं। लेकिन इस बार लॉकडाउन की वजह से ज्यादातर लोग गांवों में हैं और ऐसे में जंगलों में शिकार के मामलों में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई है। लोग चोरी-छुपे जंगलों में अवैध शिकार और अवैध वन कटान की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। ऐसे में वनों की आग की घटनाओं के बढ़ने का अंदेशा जताया जा रहा है।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक अजय कुमार का कहना है कि वनों की आग से निपटने के लिए तैयारियां पूरी की गई हैं। फारेस्ट गार्ड अपने-अपने स्थानों पर जंगलों की आग पर नजर बनाए हुए हैं। इसके अलावा जैसे ही लॉकडाउन हटता है वैसे ही फायर वाचर की तैनाती भी जंगलों में की जाएगी। जंगलों की आग पर नजर रखने के लिए अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे दिए गए हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008